IJISEM
INTERNATIONAL JOURNAL OF INNOVATIONS IN SCIENCE ENGINEERING AND MANAGEMENT

राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा के लिए छात्र केंद्रित दृष्टिकोण: उत्कृष्टता के लिए सीखने के अनुभवों को बढ़ाना

OPEN ACCESS

Volume: 3

Issue: 1

Month: March

Year: 2024

ISSN: 2583-7117

Published: 05.3.2024

Citation:

डॉ उषा वैद्य[1], रंजना पटैल[2] ''राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा के लिए छात्र केंद्रित दृष्टिकोण: उत्कृष्टता के लिए सीखने के अनुभवों को बढ़ाना'' International Journal of Innovations In Science Engineering And Management, vol. 3, no. 1, 2024, pp. 16–19.

This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Share Alike 4.0 International License

डॉ उषा वैद्य[1], रंजना पटैल[2]

[1]शोध निर्देशक, समाजशास्त्र रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय

[2]शोधार्थी, समाजशास्त्र रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय

सारांश

यह समीक्षा पत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति के संदर्भ में छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण के निहितार्थों और अभिव्यक्तियों का पता लगाने और गंभीर रूप से विश्लेषण करने का प्रयास करता है। नीति के प्रमुख सिद्धांतों, शैक्षिक दर्शन और कार्यान्वयन रणनीतियों की व्यापक परीक्षा के माध्यम से, इस पत्र का उद्देश्य इस बात पर प्रकाश डालना है कि छात्र–केंद्रित प्रथाओं को अपनाने से सीखने के अनुभवों को बढ़ाने में कैसे योगदान होता है और परिणामस्वरूप, शैक्षिक उत्कृष्टता का पीछा होता है। यह समीक्षा छात्र–केंद्रित रणनीतियों के सफल कार्यान्वयन से जुड़ी चुनौतियों और अवसरों की पड़ताल करती है, जो शैक्षिक परिदृश्यों को बदलने की बारीक गतिशीलता में अंतर्दृष्टि प्रदान करती है। मौजूदा साहित्य, अनुभवजन्य अध्ययन और नीतिगत दस्तावेजों को संश्लेषित करके, यह पत्र छात्र–केंद्रित शिक्षा के प्रतिच्छेदन और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के ढांचे के भीतर उत्कृष्टता की खोज पर चल रहे प्रवचन में योगदान करना चाहता है।

खोजशब्दों: राष्ट्रीय शिक्षा नीति, छात्र केंद्रित दृष्टिकोण, उत्कृष्टता।

1. परिचय

हाल के वर्षों में, शिक्षा के परिदृश्य में एक परिवर्तनकारी बदलाव आया है, जो छात्र–केंद्रित दृष्टिकोणों की आवश्यकता की बढ़ती मान्यता से प्रेरित है जो व्यक्तिगत सीखने के अनुभवों को प्राथमिकता देते हैं [1]- इस तरह के परिवर्तनों से वैश्विक शैक्षिक प्रतिमान काफी प्रभावित हुआ है, और इस विकास को दर्शाने वाली एक उल्लेखनीय पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) है। भारतीय शिक्षा प्रणाली में क्रांति लाने के उद्देश्य से अधिनियमित, एनईपी सीखने के अनुभवों की समग्र गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने पर पर्याप्त जोर देता है और इसके परिणामस्वरूप, शिक्षा की उत्कृष्टता होती है। [2]] [3]

छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण का सार शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं, क्षमताओं और आकांक्षाओं को स्वीकार करने में निहित है, जिससे पारंपरिक शैक्षणिक पद्धतियों से परे एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा मिलता है। वर्ष 2020 में शुरू की गई एनईपी, पारंपरिक शिक्षक–केंद्रित मॉडल से अधिक समग्र, शिक्षार्थी–केंद्रित ढांचे में एक आदर्श बदलाव को दर्शाती है। यह नीति न केवल शैक्षिक सुधार की व्यापक रूपरेखा को रेखांकित करती है बल्कि शैक्षिक उत्कृष्टता, समग्र विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के परिकल्पित लक्ष्यों को प्राप्त करने में छात्र–केंद्रितता की महत्वपूर्ण भूमिका को भी रेखांकित करती है।

1.1: एनईपी 2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 देश की शिक्षा प्रणाली की चुनौतियों और आकांक्षाओं को दूर करने के लिए भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक व्यापक नीतिगत रूपरेखा थी।

एनईपी 2020 ने पिछली राष्ट्रीय शिक्षा नीति को बदल दिया, जिसे 1986 में तैयार किया गया था और 1992 में संशोधित किया गया था। इसका उद्देश्य 21 वीं सदी की जरूरतों को पूरा करने के लिए शिक्षा क्षेत्र को बदलना और सीखने के लिए अधिक समग्र और लचीले दृष्टिकोण को बढ़ावा देना है। [4]

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की कुछ प्रमुख विशेषताएं और मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं: [5]

1. मूलभूत परिवर्तन

एनईपी 2020 ने प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा (ईसीसीई) और "5. 3. 3. 4" स्कूल पाठ्यक्रम संरचना पर ध्यान देने के साथ शिक्षा प्रणाली में मूलभूत परिवर्तन लाए। [6]–[8]

2. बहु–विषयक और समग्र शिक्षा

इसने एक बहु–विषयक दृष्टिकोण पर जोर दिया, जिससे छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों में विषयों का चयन करने और मुख्यधारा के पाठ्यक्रम में पाठ्येतर गतिविधियों को एकीकृत करके समग्र विकास को बढ़ावा देने की अनुमति मिली। [9]

3. उच्च शिक्षा में लचीलापन

नीति ने क्रेडिट–आधारित प्रणाली, डिग्री कार्यक्रमों में कई प्रवेश और निकास बिंदुओं और संस्थानों के बीच क्रेडिट के हस्तांतरण की सुविधा के लिए क्रेडिट के एक अकादमिक बैंक को बढ़ावा देकर उच्च शिक्षा में अधिक लचीलेपन की वकालत की।

4. क्षेत्रीय भाषाओं का प्रचार

इस नीति का उद्देश्य क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देना और उनका संरक्षण करना है, जिसमें सुझाव दिया गया है कि छात्रों को अपनी मातृभाषा के अलावा कम से कम दो भाषाएं सीखनी चाहिए.

5. उच्च शिक्षा सुधार

NEP 2020 ने विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC) और अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद (AICTE) की जगह एक एकल उच्च शिक्षा नियामक निकाय, भारतीय उच्च शिक्षा आयोग (HECI) के निर्माण का प्रस्ताव रखा। [10]] [11]

1.2: उच्च शिक्षा के लिए एनईपी 2020 में चुनौतियां और मुद्दे

जबकि भारत में उच्च शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 को इसकी महत्वाकांक्षी दृष्टि और परिवर्तनकारी लक्ष्यों के लिए सराहा गया है, यह कई चुनौतियों और मुद्दों का भी सामना कर रही है जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है। उच्च शिक्षा में एनईपी 2020 के कार्यान्वयन से जुड़ी कुछ प्रमुख चुनौतियों में शामिल हैं: [12]

- संसाधन आवंटन और वित्त पोषण
- संकाय प्रशिक्षण और विकास
- पाठ्यचर्या ओवरहाल
- स्वायत्तता और जवाबदेही
- भाषा कार्यान्वयन
- समावेशिता और पहुंच
- प्रौद्योगिकी एकीकरण और डिजिटल विभाजन

2. साहित्य समीक्षा

यह पत्र उच्च शिक्षा प्रणाली में घोषित विभिन्न नीतियों पर प्रकाश डालता है और वर्तमान में अपनाई गई प्रणाली के साथ उनकी तुलना करता है। भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली पर एनईपी 2020 के विभिन्न नवाचारों और अनुमानित प्रभावों के साथ–साथ इसकी खूबियों पर चर्चा की गई है। इसमें सुझाव दिया गया है कि हर देश में अर्थव्यवस्था, सामाजिक स्थिति, प्रौद्योगिकी अपनाने और स्वस्थ मानव व्यवहार को तय करने में उच्च शिक्षा एक महत्वपूर्ण पहलू है। उच्च शिक्षा प्रसाद में देश के प्रत्येक नागरिक को शामिल करने के लिए जीईआर में सुधार करना देश सरकार के शिक्षा विभाग की जिम्मेदारी है। [13]

हर देश में अर्थव्यवस्था, सामाजिक स्थिति, प्रौद्योगिकी अपनाने और स्वस्थ मानव व्यवहार को तय करने में उच्च शिक्षा एक महत्वपूर्ण पहलू है। उच्च शिक्षा प्रसाद में देश के प्रत्येक नागरिक को शामिल करने के लिए जीईआर में सुधार करना देश सरकार के शिक्षा विभाग की जिम्मेदारी है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 निजी क्षेत्र के लिए उच्च शिक्षा खोलकर गुणवत्ता, आकर्षण, सामर्थ्य में सुधार और आपूर्ति में वृद्धि के लिए अभिनव नीतियां बनाकर और साथ ही प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थान में गुणवत्ता बनाए रखने के लिए सख्त नियंत्रण के साथ इस तरह के उद्देश्य को प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर है। [14]

इस पेपर की मुख्य विशेषताएं विभिन्न शैक्षिक चरणों की विशेषताएं, इस नई नीति के कुछ सिद्धांत, पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 और वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच अंतर, उच्च शिक्षा प्रणाली में अपनाई गई विभिन्न चीजें, एनईपी 2020 में विभिन्न नवाचार, एनईपी 2020 के मुख्य निहितार्थ, एनईपी 2020 में उच्च शिक्षा के लाभ और सुधार के लिए कुछ सुझाव हैं। [15]

यह पत्र वर्तमान शैक्षिक नीति संदर्भ की समीक्षा करता है जिसके भीतर यूरोपीय उच्च शिक्षा संस्थान संचालित होते हैं। सामाजिक विकास और प्रवृत्तियों के साथ–साथ शिक्षक–केंद्रित शिक्षा से छात्र–केंद्रित शिक्षा में एक प्रतिमान और संस्कृति बदलाव की सुविधा के लिए पाठ्यचर्या सुधार के प्रयासों पर चर्चा की जाती है। पेपर आगे संकाय और छात्रों के दृष्टिकोण से प्रमुख बाधाओं को रेखांकित करता है जो उच्च शिक्षा अभ्यास में छात्र–केंद्रित सीखने के दृष्टिकोण के सफल और व्यापक कार्यान्वयन में बाधा डालते हैं। [16]

यह अध्ययन इस बात की पड़ताल करता है कि भारतीय शिक्षकों की मान्यताएं उनके अभ्यास से कैसे संबंधित हैं, और क्या कुछ प्रचलित मान्यताएं हैं जो शिक्षार्थी–केंद्रित प्रतिमान के साथ संघर्ष करती हैं। तीन भारतीय राज्यों में 60 प्राथमिक शिक्षकों की मान्यताओं को लिखित प्रश्नावली, अर्ध–संरचित साक्षात्कार और खुले अंत वाले जीवन–कथाओं के माध्यम से खोजा जाता है, जबकि उनके अध्यापन का विश्लेषण कक्षा टिप्पणियों के माध्यम से किया जाता है। निष्कर्ष कई प्रचलित सांस्कृतिक मान्यताओं का सुझाव देते हैं जो वास्तव में शिक्षार्थी–केंद्रित शिक्षाशास्त्र के विरोधी हैं। इस शोध से भारत और अन्य विकासशील देशों में शिक्षक प्रशिक्षकों और नीति निर्माताओं के लिए शिक्षकों के विश्वासों के साथ जुड़ने की आवश्यकता और स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों को ध्यान में रखते हुए पश्चिमी–मूल प्रगतिशील शिक्षाशास्त्र को प्रासंगिक बनाने की आवश्यकता के बारे में उपयोगी अंतर्दृष्टि उत्पन्न होनी चाहिए। [17]

लेखकों ने मुद्दों को हल करने के लिए नीति दस्तावेजों और कंप्यूटर सहायता प्राप्त गुणात्मक डेटा विश्लेषण सॉफ्टवेयर के फोकस के महत्वपूर्ण क्षेत्रों को समझने के लिए गुणात्मक डेटा विश्लेषण तकनीकों का उपयोग किया है। शोध ट्विटर के डेटा का भी उपयोग करता है। डेटा (नीति दस्तावेज) मानव संसाधन विकास मंत्रालय (एमएचआरडी) की वेबसाइट से डाउनलोड किया गया था। एकत्रित डेटा की बेहतर समझ के लिए, वर्ड क्लाउड, ट्रीमैप, प्रोजेक्ट मैप और द माइंड मैप, हितधारकों की भावनाओं के चित्रमय प्रतिनिधित्व के साथ, पेपर में प्रस्तुत किया गया है। पेपर नीति के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं की पहचान करता है – उच्च शिक्षा क्षेत्र के लिए पाठ्यक्रम, भाषा और छात्र। यह पेपर एनईपी 2020 से संबंधित भावना विश्लेषण पर भी चर्चा करता है। यह पाया गया कि अधिकांश लोग नीति को सकारात्मक और स्वागत योग्य कदम मानते हैं। [18]

यह अध्ययन शिक्षा को एक ऐसे कारक के रूप में पहचानता है जो चेन्नई, मदुरै और बंगलौर शहर के विशेष क्षेत्रों में देखे गए ग्रामीण से शहरी प्रवास में हेरफेर करता है और नई शिक्षा नीति के अधिनियमन की आवश्यकता है। अनुसंधान को उन्हीं शहरों में स्वीकार किया गया था क्योंकि कुछ चयनित क्षेत्रों में ग्रामीण–शहरी शिक्षा का प्रभाव देखा जा सकता है। यह मदुरै, चेन्नई और बैंगलोर में किया गया था। पेपर का प्रमुख उद्देश्य 2020 की नई शैक्षिक नीति की जागरूकता, धारणा और प्रभावों को समझना और पर्याप्त प्रशिक्षित कर्मचारियों और संसाधनों को प्रदान करने में व्यावहारिक निहितार्थों का निर्धारण करने के लिए शैक्षिक नीति की मौजूदा स्थिति के बारे में जानना है। [19]

3. निष्कर्ष

एनईपी के सिद्धांतों की गहन समीक्षा के माध्यम से, यह स्पष्ट हो जाता है कि नीति आर्किटेक्ट प्रत्येक शिक्षार्थी में निहित विविधता को पहचानते हैं और एक शैक्षणिक दृष्टिकोण की वकालत करते हैं जो व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुरूप है। एक समग्र और बहु–विषयक परिप्रेक्ष्य को अपनाकर, एनईपी एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की कल्पना करता है जो पारंपरिक सीमाओं को पार करती है, एक ऐसे वातावरण को बढ़ावा देती है जहां छात्र न केवल ज्ञान प्राप्त करते हैं बल्कि महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता और सीखने के लिए आजीवन प्यार भी विकसित करते हैं।

शिक्षा में उत्कृष्टता की दिशा में यात्रा, जैसा कि एनईपी द्वारा स्पष्ट किया गया है, समावेशिता, लचीलेपन और अनुकूलन क्षमता के सिद्धांतों पर टिका है। क्षेत्रीय भाषाओं पर जोर, स्कूल पाठ्यक्रम का पुनर्गठन और प्रौद्योगिकी का एकीकरण सामूहिक रूप से एक ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र में योगदान करते हैं जो 21 वीं सदी की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम अच्छी तरह गोल व्यक्तियों का पोषण करता है।

जैसा कि हम एनईपी द्वारा निर्देशित शैक्षिक सुधार के चौराहे पर खड़े हैं, यह पहचानना अनिवार्य है कि छात्र–केंद्रित उत्कृष्टता की यात्रा गतिशील और निरंतर है। निरंतर निगरानी, मूल्यांकन और अनुकूलन क्षमता यह सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण होगी कि एनईपी द्वारा निर्धारित उदात्त लक्ष्यों को देश भर में कक्षाओं और व्याख्यान कक्षों में ठोस परिणामों में अनुवादित किया जाए।

4. संदर्भ

[1] P. Mittal and R. D. P. Sistla, *Implementing National Education Policy - 2020*. 2022.

[2] B. Leibowitz, V. Bozalek, and P. Kahn, “Theorising Learning to Teach in Higher Education,” *Theor. Learn. to Teach High. Educ.*, vol. 23, no. 3, pp. 1–237, 2016, doi: 10.4324/9781315559605.

[3] A. Kumar, “Importance Of National Education Policy-2020 In Imparting Education,” *J. Posit. Sch. Psychol.*, vol. 2022, no. 2, pp. 6557–6561, 2022.

[4] P. S. Aithal and S. Aithal, “Analysis of the Indian National Education Policy 2020 towards Achieving its Objectives,” *Int. J. Manag. Technol. Soc. Sci.*, no. 102549, pp. 19–41, 2020, doi: 10.47992/ijmts.2581.6012.0102.

[5] A. Das and W. Bengal, "Vision of Present Approaches in Education System Addressed By New National Education Policy- 2020 in India," *Int. Res. J. Mod. Eng. Technol. Sci.*, no. 11, pp. 1705–1712, 2023, doi: 10.56726/irjmets46308.

[6] MHRD, "National Education Policy 2020 Ministry of Human Resource Development Government of India," *Minist. Hum. Resour. Dev.*, pp. 1–66, 2020.

[7] E. S. U. and E. International, "OVERVIEW Overview on STUDENT-CENTRED LEARNING IN HIGHER Learning in Higher EDUCATION Education in Europe," p. 40, 2010, [Online]. Available: https://www.esu-online.org/wp-content/uploads/2016/07/Overview-on-Student-Centred-Learning-in-Higher-Education-in-Europe.pdf.

[8] V. I. I. Issue, "Voices of Teachers and Teacher Educators," vol. II, no. 1, 2013.

[9] I. KPMG, "Impact of National Education Policy 2020 and opportunities for stakeholders," no. August, 2020.

[10] P. T. N. A. B. Lawange, "NEW EDUCATION POLICY : AN OVERVIEW," vol. 11, no. 2, pp. 653–660, 2023.

[11] A. A. Mandal, "International Journal of Research Publication and Reviews A Critical Analysis of the National Education Policy 2020 : Implications and Challenges," vol. 4, no. 7, pp. 1971–1978, 2023.

[12] P. Nagpal, "Implementing the National Education Policy 2020: Challenges and Solutions in School Education in India," vol. 11, no. 1, pp. 828–831, 2023, [Online]. Available: www.ijcrt.org.

[13] P. S. Aithal and S. Aithal, "Analysis of the Indian National Education Policy 2020 towards Achieving its Objectives," *Int. J. Manag. Technol. Soc. Sci.*, no. August, pp. 19–41, 2020, doi: 10.47992/ijmts.2581.6012.0102.

[14] B. Venkateshwarlu, "A Critical Study of NEP 2020: Issues, Approaches, Challenges, Opportunities and Criticism," *Int. J. Multidiscip. Educ. Res.*, vol. 10, no. 2, pp. 191–196, 2021, [Online]. Available: www.ijmer.in.

[15] N. Banerjee, A. Das, and S. Ghosh, "National Education Policy (2020): a Critical Analysis," *Towar. Excell.*, vol. 13, no. 3, pp. 406–420, 2021, doi: 10.37867/te130334.

[16] S. Hoidn, "The Pedagogical Concept of Student-Centred Learning in the Context of European Higher Education Reforms," *Eur. Sci. Journal, ESJ*, vol. 12, no. 28, p. 439, 2016, doi: 10.19044/esj.2016.v12n28p439.

[17] S. Brinkmann, "Learner-centred education reforms in India: The missing piece of teachers' beliefs," *Policy Futur. Educ.*, vol. 13, no. 3, pp. 342–359, 2015, doi: 10.1177/1478210315569038.

[18] R. P. S. Kaurav, K. G. Suresh, S. Narula, and R. Baber, "New Education Policy: Qualitative (Contents) Analysis and Twitter Mining (Sentiment Analysis)," *J. Content, Community Commun.*, vol. 12, no. November 1956, pp. 4–13, 2020, doi: 10.31620/JCCC.12.20/02.

[19] K. R. Gopalan, K. R. Gopalan, S. Nivithra, and D. Vezhaventhan, "Public opinion on the new education policy 2020," *J. Educ. Teach. Trainers*, vol. 13, no. 1, pp. 183–192, 2022, doi: 10.47750/jett.2022.13.01.021.